पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 16.01.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा वेबिनार

दिनाक 3,4,5 फरवरी 2023

ऑनलाइन जूम से स्वयं जुड़े व मित्रो को प्रेरित करें

अनिल आर्य, संयोजक

वर्ष-39 अंक-16 माघ-2079 दयानन्दाब्द 199 16 जनवरी से 31 जनवरी 2023 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.01.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केरल राज्यपाल से राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य की भेंट

आर्य समाज का राष्ट्र निर्माण का कार्य सराहनीय –आरिफ मोहम्मद खान (महामहिम राज्यपाल केरल)

वीरवार 5 जनवरी 2023,केरल (कोल्लम) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने राजभवन केरल में महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान जी से भेंट की और उन्हें 'ओ३म् प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया,साथ ही आर्य युवक परिषद की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्रीय एकता निर्माण के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है आज इसे और अधिक विस्तार देने की जरूरत है।उन्होंने कहा कि आज भारत विश्व पटल पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है ऐसे मे युवाओ की जिम्मेवारी और अधिक बढ़ जाती है आप और अधिक कार्य करें मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के साथ प्रवीण आर्या पिंकी व आस्था आर्या भी उपस्थित थे।

गुरुकुल केरल का राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया अवलोकन

मंगलवार 3 जनवरी 2023, केरल में वैदिक संस्कृति के प्रचार में संलग्न 'वेदा गुरुकुल' का अवलोकन करने दिल्ली से राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य सपरिवार केरल पहुंचे और सुदूर क्षेत्र में आर्य समाज के लिए समर्पित आचार्य के एम राजन जी से भेंट की। गुरुकुल के अधिष्ठाता के एम राजन ने गुरुकुल व आर्य समाज के कार्य कलाप की विस्तार से जानकारी दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने विद्यार्थियों को संबोधित किया व प्रवीण आर्य पिंकी ने भजन सुनाये। आचार्य विश्ववन्ग जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। रोहतक से डा.रवि प्रकाश जी भी उपस्थित थे। आस्था आर्य ने सुन्दर छाया चित्र लिए।

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका "युवा उद्घोष" को नियमित बनाये रखने के लिये केवल 100/– रू का सहयोग "युवा उदघोष, A/N0. 20024363377, IFSCode. MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेजें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 489वां वेबिनार सम्पन्न

'लोहड़ी व मकर सक्रांति का वैज्ञानिक स्वरूप' पर गोष्ठी सम्पन्न

शुक्रवार 13 जनवरी 2023, केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 'लोहड़ी व मकर संक्रांति का वैज्ञानिक स्वरूप' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 489 वहां वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने कहा कि भारत पर्व और परंपराओं का समृद्ध भंडार है। इस देश की परंपराएं वैज्ञानिक तथ्यों और सिद्धांतों पर टिकी हैं क्योंकि इस देश की विचारधारा के मूल स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद ग्रन्थ हैं और हर वेद मन्त्र एक वैज्ञानिक तथ्य और उस पर आधारित सन्देश प्रस्तुत करता है।पर्व इसी समृद्ध परंपरा के अंग हैं और हर पर्व या उत्सव का वैज्ञानिक आधार व महत्त्व है।वक्ता ने वर्तमान वर्ष में मकर संक्रांति की काल अवधि की चर्चा करते हुए इसका ऋतु क्रम से सम्बन्ध बताया।नदियों में स्नान और तिल, गुड़ के सेवन की प्रथा के पीछे का वेज्ञानिक उल्लेख किया। शिशिर ऋतु में चन्द्रमा की शक्ति बढ़ती है जिसका अनुकूल प्रभाव मनुष्य, पशु और वृक्ष वनस्पतियों पर पड़ता है। इससे रस की वृद्धि होती है जो इन प्राणियों को पुष्ट करती है। यह ऋतु विसर्गकाल अर्थात दक्षिणायन का अंतकाल कहलाती है और मकर संक्रांति इसी ऋतु का उत्सव है। शीतकाल का खानपान वर्ष भर प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है। उन्होनें बताया कि मकर संक्रांति के समय सूर्य जब दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करता है तो सूर्य कि अग्नि प्रबल होने लगती है। इस प्रबल अग्नि से मृतों को स्वत्व धारक बल प्राप्त होता है। इसीलिए इच्छा मृत्युधारी भीष्म ने इसी काल में प्राण त्यागे थे। इस काल मे प्राण त्यागने का मोक्ष प्राप्त करने या स्वर्ग जाने से कोई सम्बन्ध नहीं है।मकर संक्रांति से एक दिन पहले उत्तर भारत में लोहड़ी का पर्व मनाया जाता है। अग्निदेव को तिल, गुड़, चावल और सूखे मक्के की आहुति दी जाती है। यह भी एक देव यज्ञ है। भारत के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न प्रकार से यह पर्व मनाया जाता है यह विभिन्न परंपराओं का यज्ञ रूप है। साथ ही महत्वपूर्ण तथ्य सामने रखा कि पृथ्वी की 90 प्रतिशत जनसंख्या इसके उत्तरार्ध गोलार्ध में ही निवास करती है। अग्नि और शक्ति की वृद्धि का द्योतक यह पर्व पूरी मानव जाति के लिए उल्लास का दिन है। इस दिन सूर्य की किरणें एक विशेष प्रकार की ऊर्जा लिए होती हैं। यज्ञ रूपी परंपराएं हमारे ओज,तेज व बल की वृद्धि करके हमें अधिक समर्थ व उन्नतिशील बनाती हैं। मुख्य अतिथि आर्य नेता नरेंद्र आर्य सुमन व अध्यक्ष डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए भारतीय संस्कृति को महान व वैज्ञानिक बताया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि नई युवा पीढ़ी अपनी गौरव शाली परम्पराओं का सम्मान वा उनपर गर्व करना सीखे। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने लोहड़ी पर्व की बधाई देते हुए कहा कि लोहड़ी की आग में दहन हो सारे गम,खुशियां आएं आपके जीवन में हर दम और श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

'योगमय जीवन पद्धति' पर गोष्ठी सम्पन्न

बुधवार 11 जनवरी 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'योगमय जीवन पद्धति' विषय पर ऑन लाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 488वाँ वेबनार था। मुख्य वक्ता शिक्षाविद द्रोपती तनेजा (82 वर्षीय) ने योग की जीवन पद्धति के बारे में विस्तार से बताते हुए आत्मा पर बल दिया उन्होंने सत्य अहिंसा को अपनाने पर बल दिया,साथ ही प्राणायाम करने और नियमित तौर पर साधना करने को कहा। व्यक्ति को सात्विक जीवन को जीना चाहिए वा आत्म साधना करके चिंतन करना चाहिए। हमारे जो साधन होने चाहिए वह आत्मा के लिए,अपने आप के लिए भी होने चाहिएं।उन्होंने जोर देकर कहा कि अपने रास्ते पर जब हम अपने आप को पहचान लेंगे तो निश्चित तौर पर हम जीवन मुक्त हो जाएंगे तो अवश्य हम मोक्ष के द्वार की ओर आसानी से कदम रख पाएंगे।महापुरुषों की चर्चा करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद जी, विरजानंद जी अन्य उदाहरण देते हुए उनके वक्तव्य हमारे समक्ष रखें।अहंकार को त्यागने के लिए हमें योग साधना करना बहुत आवश्यक है जब तक हम अपनी आत्म शुद्धि नहीं करेंगे हम ध्यान और धारणा की स्थिति को नहीं पा सकते उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि जैसे किसी व्यक्ति की परिवार में मृत्यु हो जाती है तो जो सबसे प्रिय व्यक्ति होता है वही जिसके बिना एक पल भी नहीं रह सकते उसको घर से श्मशान घाट ले जाने की आहुति देने की जल्दी रहती हैं यथार्थ के कठोर धरातल पर रहकर जीवन जीने की साधना के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि अनिता रेलन (प्रबंधक, केनरा बैंक) ने कहा कि जो शरीर है वह नश्वर है साथ ही सत्य को किसी कवच की जरूरत नहीं है क्योंकि वह क्षणिक नहीं है शरीर को सुरक्षा चाहिए, आत्मा को नहीं चाहिए मन को सुरक्षा चाहिए स्वरूप को नहीं चाहिए कुछ कहते हैं मौन रहना आध्यात्मिकता है तो इसके आगे उन्होंने बताया कि आध्यात्मिकता को पाने के लिए धारणा ध्यान समाधि अंतिम तीन अंगों का सामूहिक नाम संयम है समाधि के बाद प्रज्ञा का उदय योग का अंतिम लक्ष्य है। अध्यक्षता करते हुए कुसुम भंडारी ने कहा कि हमें योग मय जीवन पद्धति को अपने जीवन में नियमित रुप से अपनाना होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविंद्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा, सुदर्शन चौधरी, बिन्दु मदान, रजनी गर्ग, ईश्वर देवी, सरला बजाज आदि के मधुर भजन हुए।

'यज्ञ व यज्ञीय भावना' पर गोष्ठी सम्पन्न

बुधवार 14 दिसम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'यज्ञ व यज्ञीय भावना' भावना विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना काल से 479 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान डा. राम चन्द्र (विभागाध्यक्ष संस्कृत,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि आदर्श समाज के लिए यज्ञ आवश्यक है। भारत की सनातन ऋषि परम्परा एवं शास्त्रों में यज्ञ का स्थान सर्वोच्च माना गया है।यज्ञ से बढकर श्रेष्ठ कार्य कुछ भी नहीं होता है।वेदों में यज्ञ को सम्पूर्ण ब्रह्मांड की नाभि कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को स्वर्ग तक पहुंचाने वाली नौका बताया है।यज्ञ में जहां वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण एवं सस्वर पाठ से आध्यात्मिक एवं मानसिक लाभ होता है वहीं शुद्ध गौघृत तथा औषधि युक्त सामग्री के प्रयोग से पर्यावरण शुद्धि भी होती है।उन्होंने आगे बताया कि आचार्य चाणक्य के अनुसार जिन घरों में विद्वानों का आगमन नहीं होता, जहां पर वेद तथा शास्त्रों पर विचार नहीं होता और यज्ञ के अनुष्ठान से स्वाहा का उद्घोष नहीं होता वे श्मशान के तुल्य होते हैं। महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का उद्धरण देते हुए कहा कि प्राचीन भारत में घर घर में प्रतिदिन यज्ञ और होम की परम्परा थी।यही कारण था कि भारतीय समाज रोगों से मुक्त एवं सुखों से पूरित था।डॉ रामचन्द्र ने कहा कि योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की महान वाणी गीता में कहा गया है कि नियमित यज्ञ करने के बाद भोजन करने वाले व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और जो व्यक्ति अकेला ही खाता है वह पाप का भागी होता है। उन्होंने वहा कि स्वाहा और इदं न मम मे यज्ञ की भावना का स्वरूप प्रकट होता है।सब कुछ पुरुषार्थ से प्राप्त करने पर भी समाज को अर्पण करना यज्ञ की सर्वोच्च भावना है।हवन में प्रयुक्त आचमन एवं समिधाधान आदि विधियों के रहस्यों का भी स्वरूप स्पष्ट किया तथा वैदिक मन्त्रों का भावार्थ भी बताया।उन्होंने जोर देकर कहा कि हर घर यज्ञ की परम्परा का पुनरू आरम्भ होना चाहिए।विज्ञान की कितनी भी उन्नति हो पर सच्चे मानव और श्रेष्ठ नागरिक के निर्माण के लिए यज्ञ का कोई विकल्प नहीं है। बचपन से ही यज्ञ का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि परोपकार की भावना से किया कार्य यज्ञ है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री रजनी गर्ग व अध्यक्ष विमला आहुजा ने भी यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमे अपना जीवन यज्ञ मय बनाना चाहिए जिससे आपके जीवन से सुगंध आए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने यज्ञ महिमा की चर्चा करते हुए बताया की यज्ञ करने से मनुष्य की सुख प्राप्ति सहित कामनाओं की पूर्ति होती है और उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायक रविन्द्र गुप्ता, प्रवीणा ठक्कर, कमला हंस, कमलेश चांदना, रजनी चुग, सुनीता अरोड़ा, कृष्णा गांधी, कौशल्या अरोड़ा, ईश्वर देवी,जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, वीरेन्द्र आहुजा, कुसुम भंडारी, बी डी गांधी आदि के मधुर भजन हुए।

आर्य समाजसेवी सुशीला हरिदेव आर्य स्मृति दिवस सम्पन

माता सुशीला व हरिदेव आर्य की स्मृति में ''वैदिक सत्संग'' का आयोजन रविवार 1 जनवरी 2023 को नगर आर्यसमाज शाहदरा, दिल्ली में बड़ी धूमधाम से किया गया। मुख्य वक्ता आचार्य वीरपाल वेदालंकार ने उन्हें महान आत्मा बताया जिन्होंने आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। अध्यक्षा श्रीमती ऊषा किरण ने उन्हें चलती फिरती आर्य आर्य समाज की संज्ञा दी। यज्ञब्रह्मा आचार्य ब्रह्मदेव जी ने कहा पं. हरिदेव जी मैं ने अपने जीवनकाल में कई आर्य समाजों की स्थापना की और युवाओं के चरित्र निर्माण का कार्य किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी ने वैदिक साहित्य में उनके योगदान की प्रशंसा की जिसमें 'वैदिक नित्य कर्म विधि' भी शामिल है। समाज प्रधान श्री राज कुमार कपूर ने उनके संगठन बनाने व परिवारों को जोड़ने की कला का लोहा माना। श्रीमती विजयरानी शर्मा, श्री ईश नारंग, महेश भार्गव, यज्ञवीर चौहान, बृजभूषण, अशोक बत्रा, राजीव कोहली, चन्द्रशेखर, संजय कपूर आदि ने प्रधान जी प्रधाना जी के साथ बिताये प्रेरणदायक संस्मरण सभी के साथ साझा किये। ट्रस्टी यशोवीर आर्य ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर उन्हें श्रदांजलि देते हुए सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम कुशल संचालन श्री संजय आर्य ने किया। शांतिपाठ के पश्चात सभी ने मिलकर ऋषि लंगर का आनन्द लिया।

'अदिना स्याम शरदः शतम्' पर गोष्ठी सम्पन्न

सोमवार 09 जनवरी 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'अदिनारू स्याम शरदः शतम्' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 487वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि मनुष्य जन्म बड़े ही अच्छे कर्मों से मिला है हमे सौ वर्ष तक स्वस्थ रहकर जीने की कामना करनी चाहिए यही हमारे वेद आदि शास्त्रों का संदेश है। उन्होंने कहा कि वेद मंत्र के द्वारा हम परमात्मा से प्रतिदिन एक सौ शरद ऋतु अर्थात कम से कम एक 100 वर्ष तक पवित्र जीवन जीने की मंगल कामना करते हैं। जैसे सूर्य आदि देवता संसार के हित के लिए सदैव स्वच्छ,शुद्ध, पवित्र, कल्याणकारी कार्य करते रहते हैं, वैसे ही हम भी आंखों से 100 वर्ष तक पवित्र देखते रहें, 100 वर्षों तक पवित्र सुनते रहें, 100 वर्ष तक पवित्र बोलते रहें, हर प्रकार से पवित्रता के साथ जीवन जीते हम अदीन होकर अर्थात किसी के ऊपर निर्भर ना होकर बलवान ज्ञानेंद्रिय और कर्म इंद्रियों द्वारा निरोग और पवित्र जीवन जीने की प्रार्थना करते हैं। जीने को जीवन तो एक निकृष्ट रोगी, व्यसनी, हिंसक, भ्रष्ट दुराचारी, लोभी और पापी व्यक्ति भी जीता है। यह जीना तो कोई जीना नहीं है, एक बात का यहां विशेष महत्व है 'परमात्मा पवित्र है हम भी जीवन जिएं तो पवित्र शुद्ध जीवन जिएं, धार्मिक जीवन जिएं, परोपकारी जीवन जिएं, सदाचारी जीवन जिएं। रोग रहित सुखी जीवन जिएं। मंत्र के पहले भाग में प्रार्थना की गई है पश्येम शरदरू शतम्, अर्थात 100 वर्ष पर्यन्त देखें। यहां देखने का क्या अर्थ है ज्ञान की प्राप्ति। हमारा उपास्य देव चक्षु अर्थात देखने वाला है। वह दूरदर्शी और दूरज है। हम भी ज्ञान प्राप्ति करें, जिससे हम जान सकें कि हमको कितना मार्ग चलना है। जीवन की महत्ता समझकर मनुष्य जीवन से प्रेम कर सकता है और महत्ता का बोध होने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। इसलिए प्रार्थना की गई है कि हम 100 वर्ष तक आंखें खोलकर देखते रहें। सब विधाओं का उपार्जन करते रहें। दूसरी प्रार्थना है जीवेम शारदरू शतम् अर्थात 100 वर्ष तक जीते रहें। 100 वर्ष तक जीवित रहें इसका अभिप्राय केवल सांस लेते रहने से नहीं हैं, अपितु ज्ञान पूर्वक जीवन बिताना है। जीवन के उद्देश्य को पूरा करना ही जीवन है। जीवन का उद्देश्य बिना ज्ञान के पूरा नहीं होता। तीसरी प्रार्थना श्रृंणुयाम शरदरू शतम् अर्थात 100 वर्ष तक सुनें। हम बहरे ना हो जाएं। यहां सुनने से अभिप्राय प्रत्येक ध्वनि को ग्रहण करने से नहीं हैं, अपितु वेदों को सुनें। वेद के अध्ययन से जीवन सफल बनाया जा सकेगा। प्रब्रवाम शरदरू शतम् – 100 वर्ष तक बोलते रहें, अर्थात जो वेद हमने पढ़े, उसका दूसरों को उपदेश करते रहें। जो वेद का प्रकाश हमें दान में मिला है उसको बुझने ना दें, यह हम सब का कर्तव्य है। यदि हम उपर्युक्त प्रार्थना को ध्यान में रखेंगे अर्थात 100 वर्ष तक ज्ञान की प्राप्ति करना, उस ज्ञान के फलस्वरूप 100 वर्ष तक वेद पढ़ना या सुनाना और 100 वर्ष तक दूसरों को पढ़ाना या सुनाना तो हम पांचवी प्रार्थना करने के अधिकारी हो जाएंगे। अदीना श्याम शरदरू शतम् अर्थात 100 वर्ष तक आयु पर्यन्त तक हम अदीन रहें। यह मंत्र अपने आप में संपूर्ण हैं। हम ईश्वर से अपने जीवन के 100 वर्षों को पूरे स्वास्थ्य के साथ जीने का वरदान मांगते हैं। 100 वर्षों तक जीना हमारे प्राणों के होने से देखना,सुनना तथा बोलना यह प्रार्थना मनुष्य की इंद्रियों से संबंधित हैं, लेकिन इन सबके बीच एक शब्द आता है अदीन। अदीन– शाब्दिक रूप से दीन का अर्थ है गरीब या लाचार। गरीब या अमीर हमारे अपने सांसारिक कर्मों का फल है। फिर ईश्वर से इस मंत्र में अदीनता के अंतर्गत क्या मांगा गया? ऐसा हो नहीं सकता कि मंत्र कार इस मंत्र में सब कुछ मांग ले और सबसे जरूरी वस्तु बुद्धि को भूल जाए। इस मंत्र में अदीनता शब्द जुड़ा है बुद्धि से। जिस व्यक्ति का मस्तिष्क बिगड़ जाए उससे बड़ा दीन कौन है? हम अपने आसपास समाज में ही देखते हैं दिमागी संतुलन बिगड़ जाने के बाद व्यक्ति कैसा विक्षिप्त हो जाता है। उसके आंख, कान, मुंह सब ठीक होते हुए भी उसके जीवन का सुख लुप्त हो जाता है। वह व्यक्ति समाज में हास्य का विषय बन जाता है।अति विषम स्थिति में उसे समाज से अलग किसी पागलखाने भेज दिया जाता है।क्या इस अवस्था में कोई व्यक्ति 100 बरस जीने की कामना कर सकता है?इस मंत्र की प्रार्थना में सबसे महत्वपूर्ण अंग है अदीन श्याम शरदरू शतम्। बिना आंखों के,बिना कान के, बिना वाणी के व्यक्ति 100 वर्ष पूर्ण कर सकता है और फिर भी अपने लिए एक आनंद का जीवन बिता सकता है,लेकिन बिना बुद्धि के यह जीवन असंभव है।जब हम ईश्वर से प्रार्थना करते है अदीन श्याम शरदरू शतम् में यही प्रार्थना करते हैं वृद्धावस्था में हमें 100 वर्ष की उम्र तक हमारी जीवनी शक्तियों का पूरा समर्थन मिले यही ईश्वर से प्रार्थना है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री राज सरदाना व अध्यक्ष रजनी चुघ योगाचार्य ने भी वेद मंत्र की प्रार्थना पर बल दिया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'वयम राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित' पर गोष्ठी सम्पन्न

शुक्रवार 16 दिसम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'वयम राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना काल से 480 वां वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि हम राष्ट्र के सजक प्रहरी बनें क्योंकि सीमा पर तो सैनिक व पुलिस रक्षा कर रही है लेकिन राज्य के अन्दर प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के दुश्मनों को पहचानें। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के ब्रह्मण,व्यापारी, छात्र सभी राष्ट्र के प्रति समर्पित हों।यदि सभी नागरिक जागरूक और कर्तव्य पारायण होंगे तो ही राष्ट्र बाहर वा अंदर से मजबूत होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने 'विजय दिवस' पर शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हमें अपनी भारतीय सेना पर गर्व है जो सेना पर प्रश्न चिन्ह उठाते हैं वह देश भक्त नहीं हो सकते। मुख्य अतिथि कृष्ण कुमार यादव (साहिबाबाद) व अध्यक्ष डा. गजराज सिंह आर्य (फरीदाबाद) ने कहा कि राष्ट्र सर्वोपरि है हमें राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'अंग्रेजी नववर्ष पर कैसा हर्ष' गोष्ठी सम्पन्न

भारतीय नववर्ष वैदिक और वैज्ञानिक है –आचार्य हरिओम शास्त्री

शुक्रवार 30 दिसम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'अंग्रेजी नववर्ष पर कैसा हर्ष' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना से 486 वां वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता आचार्य हरिओम शास्त्री ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए। उन्होने कहा कि भारतीय उपमहाद्वीप में ही पूरे वर्ष में छह ऋतुएं आती हैं।यहां के हम निवासियों का सौभाग्य है।नये वर्ष का अर्थ सब तरफ नवीनता ही नवीनता रहे। क्या इस समय सब ओर चाहे प्रकृति में,शिक्षा जगत् में,खेतों में,बागों में कहीं भी नवीनता होती है? क्या किसानों के खेतों में नयी फ़सल तैयार होती है? क्या छात्रों की नयी कक्षाएं प्रारंभ होती हैं?क्या वृक्षों पर नये फल आ जाते हैं? क्या वृक्षों और पौधों पर नये फूल और कलियां आ जाती हैं? सोचें कि इनमें क्या कोई परिवर्तन हो जाता है? यदि कुछ भी नहीं तो फिर हम पहली जनवरी को अपना नववर्ष क्यों मनाते हैं?केवल विदेशियों के अन्धानुकरण के कारण ही। हम भारतीयों को अपने धर्म,अपने धार्मिक ग्रंथों,अपने महापुरुषों, अपनी संस्कृति को,अपने नववर्ष को भी आज भूल चुके हैं। हमारा नववर्ष तो वर्ष भर की छह ऋतुओं में प्रथम 'ऋतुराज वसंत' के आगमन पर विक्रम संवत् के प्रथम दिन अथवा चौत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को आता है। उस समय विद्यालयों में बच्चों की नयी कक्षाएं प्रारंभ होती हैं। पेड़ों पर नये फूल और फल आ रहे होते हैं। पौधों पर नयी कलियां और फूलों की महक बिखरती है। किसानों के खेतों में नयी फ़सल तैयार हो जाती है।पेड़ों के पुराने पत्ते झड़ते हैं और उनके स्थान पर नये पत्ते आ रहे होते हैं। आम की मंजरियों की सुगंध से केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि कोयलें भी मस्त होकर कूं कूं की बोली से वातावरण को मधुमय बना देती हैं। अतः कवि कह उठते हैं– 'आए महन्त बसन्त' कवि ने यहां बसंत ऋतु को महन्त और ऋतुओं का राजा कहा है। वेद कहते हैं – **'ओ३म् यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मरू शरद्हविरू।।** यजुर्वेद ३१/१४।' अर्थात् जब विद्वान लोग परमात्मा के साथ मान संज्ञान यज्ञ को विस्तृत करते हैं तब इस यज्ञ के वसन्त को घी,ग्रीष्म ऋतु को इंधन (समिधा) और शरद को हवि सामग्री के रूप में प्रयोग करते हैं।यज्ञ में जो महत्वपूर्ण स्थान घी का होता है वही स्थान वसन्त ऋतु का है।तभी से हमारे संसार में नयापन आता है।अतः हमें पहली जनवरी को नववर्ष के रूप में न मानकर चौत्र शुक्ल प्रतिपदा वसन्त ऋतु से नववर्ष मानना व मनाना चाहिए।। यही हमारी भारतीय और वैदिक परम्परा तथा संस्कृति है। हमें इस पर श्रद्धा और गर्व करना चाहिए कि हम भारतीयों की परम्परा वैदिक और वैज्ञानिक है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा है कि हमें अपनी मातृ संस्कृति का सम्मान करते हुए भारतीय नववर्ष विक्रमी संवत् को उत्साह पूर्वक मनाया जाना चाहिए,मां मां होती हैं और मौसी मौसी ही। मुख्य अतिथि आर्य नेता विद्या भूषण आर्य वा अध्यक्ष कृष्णा पाहुजा ने भी नई युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से परिचय कराने वा गर्व करने का आह्वान किया।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका कमलेश चांदना, ईश्वर देवी, कमला हंस, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, कृष्णा गांधी, रविन्द्र गुप्ता, संतोष धर, संतोष सचन, प्रवीणा ठक्कर आदि के मधुर भजन हुए।

'सुर्भित कर्म सुर्भित वाणी हो सुर्भित अन्तर्मन' पर गोष्ठी सम्पन्न

गुलाब की तरह हमारा जीवन अन्दर बाहर से सुन्दर हो–अनिता रेलन

बुधवार 28 दिसम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ष्सुर्भित कर्म,सुर्भित वाणी सुर्भित अन्तर्मनष् विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 485 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता अनिता रेलन (आर्थिक सलाहकार,केनरा बैंक दिल्ली) ने कहा कि जीवन एक रहस्य है हम इसके रहस्य को बिना समझे अपने जीवन की किसी भी साधना में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते और जीवन को वैसे भी किसी भी शब्दों में बांधा नहीं जा सकता संसार अनन्त है इस अनन्त जगत में मनुष्य का जीवन एक नन्ही बूंद सा है।बूंद को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है अन्तरंग और बहिरंग दोनों को मिलाकर ही विचार और आचार बनते हैं उन्होंने जीवन को चार पुष्पों के माध्यम से समझाया पहला पुष्प बाहर का आकार एवं रंग रूप की दृष्टि से देखने में सुंदर लगते हैं किंतु सौरभ से रहित होते हैं जैसे टेसू के फूल, वैसे ही कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं बाह्य ऐश्वर्य शारीरिक सौंदर्य आदि से संपन्न है परंतु सद्गुणों सौरभ से ना के बराबर।रावण दुर्योधन जरासंध इन सब के उदाहरण देते हुए उन्होंने दूसरे प्रकार के पुष्प के बारे में बताया जिसमें सौरभ तो है, सुन्दर ना होने पर भी आकर्षित करते हैं विजय चंपा के पुष्प सौरभ के कारण उनका जीवन अनुकरणीय है।तीसरे प्रकार के पुष्प बाहर के रूप रंग की दृष्टि से भी सुंदर है अंदर की दृष्टि से भी सुंदर है सौरभ से भी महक रहे उनके जीवन का महत्व है वह है गुलाब का पुष्प जो दूर–दूर तक सुगंधी फैलाता है और उसका रंग रूप भी सुंदर है हमें भी गुलाब के फूल की तरह अंदर और बाहर से दोनों तरीके से सुंदरता को अपनाना है चतुर्थ प्रकार के पुष्प हैं जिनमें ना तो सुंदरता है ना ही सुगंध केवल नाम मात्र के फूल हैं जैसे धतूरे के फूल ऐसे ही संसार में लाखों–करोड़ों व्यक्ति हैं जिनमें ना तो शारीरिक सौन्दर्य आत्मिक गुणों की सौरभ है बाहर से इंसान का आकार तो है,परंतु सही अर्थों में इंसान नहीं है,हैवान है क्योंकि बाह्य एवं अभ्यंतर सौंदर्य से शून्य है।इसलिए उनके जीवन का कोई महत्व नहीं है उन्होंने जीवन को सफल बनाने का सूत्र बताया कि हमारा अन्तर्मन भी सुरभित होना चाहिए कर्म भी सुरभि, हमारी वाणी भी सुरभि,तो गुलाब की तरह हमारा अंदर और बाहर का उदय मुखी सुन्दर है विकसित होगा तब कभी निराशा को स्पर्श नहीं करेगी चंपा के पुष्प की तरह अंदर भी सौरभ से परिपूर्ण होगा तो आप निर्भय एवं निबंध भाव से ऊपर और ऊपर उठते चले जाएंगे। ऐसे में एक और पुष्प जो चलते–चलते याद आया। यह संसार एक झील है जिसमें विषय वासना का कीचड़ भरा है मोह का जल तरंगित हो रहा है राग द्वेष घृणा आवेश विरोध आदि विकारों के तूफानों से उद्वेलित हैं फिर भी प्रभु हमारे विषय वासना के कीचड़ से भरे हुए विशाल संसार सागर में जन्म लेकर भी कमल के समान निर्लिप्त है आपने कभी ध्यान दिया होगा कमल सदैव जल से निर्लिप्त रहता है कमल में पानी जितना भी पड़े और उस पर एक बूंद भी नहीं रहती धरती पर पानी है तो जमीन गीली हो जाती है वस्त्र पर पड़े तो गीला हो जाता है जल में कमल की तरह संसार से निर्लिप्त रहकर जीवन यात्रा करें। मेरी यही मंगल कामना है कि मानवता की डाली पर चंपा कमल और गुलाब का एक ऐसा अलबेला फूल लगाए जो अपने लिए औरों के लिए आनंददायक हो। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री वंदना शर्मा व संध्या पाण्डेय ने कहा कि हमारे जीवन से आस पड़ोस में सुगन्ध आनी चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि व्यक्ति के व्यवहार से ही सब रिश्ते बनते व बिगड़ते हैं। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, कमला हंस, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, सरला बजाज, कामलेश चांदना, ईश्वर देवी, आशा चड्ढा, कुसुम भंडारी, डा.सुदेश चुग,ललिता धवन आदि के मधुर भजन हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970